



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

अनार की उन्नत खेती

इमरान अली¹, उपेंद्र मौर्य¹, अवधेश कुमार¹ एवं विनायक²

¹फल विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमार गंज, अयोध्या (उ.प्र.)

²फल विज्ञान विभाग, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक वि. वि., मेरठ (उ.प्र.)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: avdheshk05797@gmail.com

अनार पौष्टिक गुणों से परिपूर्ण, स्वादिष्ट रसीला एवं मीठा फल है। इसका वैज्ञानिक नाम *प्युनिका ग्रेनेटम* है तथा जन्म स्थान ईरान है। अनार देश के शुष्क वातावरण वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसलिए इन क्षेत्रों में उगाये जाने वाले फलों में अनार का एक विशिष्ट स्थान है। अनार को अन्य नामों से जाना जाता है जैसे हिंदी में अनार, बांग्ला में बेदाना, संस्कृत में दाडिम, और तमिल में मदुलई। इसकी खेती मुख्यतः महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु एवं उत्तर प्रदेश राज्यों में की जाती है। निर्यात की दृष्टि से भी यह फल बहुत ही महत्वपूर्ण है।



अनार में अत्यधिक औषधीय, पोषण मूल्य और एंटीऑक्सीडेंट के सबसे समृद्ध स्रोतों में से एक है इसलिए स्वास्थ्य और पोषण संबंधी लाभों के कारण इसे "सुपर फूड" के रूप में जाना जाता है। पके फल का रस मधुर तथा स्वास्थ्यवर्धक होता है। गर्मी के मौसम में अनार के रस का शर्बत बहुत स्फूर्तिदायक होता है। आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली में दीर्घ जीवन एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए अनार को औषधि माना गया है। इसका उपयोग गले में खराश, खांसी, मूत्र संक्रमण, पाचन विकार, त्वचा विकारों के उपचार में किया गया है और यह हृदय रोग, दिल के दौरों को रोकने में मदद कर सकता है। इसके फलों से कई प्रसंस्कृत उत्पाद जैसे जूस, स्कैश, जेली, अनारदाना और माउथ फ्रेशनर तैयार किए जाते हैं। जूस अत्यधिक पौष्टिक है और गैस्ट्रिक समस्याओं से पीड़ित रोगियों के लिए अनुशंसित है। अनार के लाल रंग के सुन्दर फूल तथा आकर्षक फल गृहवाटिका को सुशोभित करते हैं।

पोषक तत्व सारणी

| पोषक तत्व | पोषक तत्व मात्रा (प्रति 100 ग्राम) |
|----------------|-------------------------------------|
| नमी | 77.9 ग्राम |
| एनर्जी | 83 कैलोरी |
| प्रोटीन | 1.67 ग्राम |
| वसा | 1.17 ग्राम |
| कार्बोहाइड्रेट | 18.7 ग्राम |
| फाइबर | 4.1 मिलीग्राम |
| आयरन | 0.3 मिलीग्राम |
| कैल्शियम | 10 मिलीग्राम |
| फास्फोरस | 36 मिलीग्राम |

| | |
|--------------|-----------------|
| पोटैशियम | 236 मिलीग्राम |
| सोडियम | 3 मिलीग्राम |
| विटामिन बी-6 | 0.075 मिलीग्राम |
| विटामिन सी | 10.2 मिलीग्राम |
| अश (राख) | 0.53 ग्राम |

मृदा एवं जलवायु

अनार का बाग लगाने के लिए 6.5 से 7.5 पी. एच. मान, 9.00 ईसी/ मिमी मृदा लवणता तथा 6.78 ईएसपी तक क्षारीयता वाली मिट्टी में भी इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। अनार की अच्छी उपज के लिए गहरी बलुई या अच्छी जल निकास वाली बलुई दोमट में उपयुक्त होती है। इसमें लवण एवं क्षारीयता सहन करने की उत्तम होने के कारण क्षारीय भूमि में लवणीय पानी से सिंचाई करके भी अच्छी उपज प्राप्त किया जा सकता है।

शुष्क एवं अर्ध शुष्क जलवायु में अनार की उत्पादन के लिए बहुत ही उपयुक्त होती है। इसके लिए वार्षिक 50-60 सेंमी वर्षा काफी है। पौधों में सूखा सहन करने की अत्यधिक क्षमता होती है। अनार के पौधों में पाला सहन करने की क्षमता होती है। फलों के विकास में रात के समय ठण्डक तथा दिन में शुष्क व गर्म जलवायु काफी सहायक होती है। ऐसी परिस्थिति में दानों का रंग गहरा लाल तथा मीठा होता है। वातावरण एवं मृदा में नमी के अत्यधिक उतार-चढ़ाव से फलों में फटने की समस्या बढ़ जाती है तथा उनकी गुणवत्ता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उन्नत किस्में

अनार के सफल उत्पादन के लिए किस्मों का चयन क्षेत्र की जलवायु, मिट्टी एवं पानी की गुणवत्ता के अनुसार करना उचित होता है। भारत में अच्छी एवं उत्पादन के लिए उन्नत किस्में निम्न लिखित हैं-

गणेश, भगवा, मृदुला, ज्योति, गोमा खट्टा, फुले भगवा सुपर, अरकता, रूबी, जालौर सीडलैस, मस्कट, अमलीदाना, जी-137, सी० ओ० -1, धोलका तथा जोधपुर रेड।

1. **गणेश:** इस किस्म के पौधे सदाबहार व मध्यम ऊंचाई के होते हैं। फल आकार में बड़े (200-300 ग्राम) एवं पीले-लाल रंग के होते हैं। दाने हल्के गुलाबी, रसदार और मीठे एवं खाने में स्वादिष्ट होते हैं। बीज छोटे व मुलायम होते हैं। एक पूर्ण विकसित पेड़ की औसत उपज 40-100 फल होती है।
2. **भगवा:** इस किस्म में कम फल फटने वाले, फलों की औसत वजन 250-300 ग्राम, केसरी चमकदार रंग के होते हैं। यह निर्यात के लिए अच्छी किस्म है।
3. **जालौर सीडलैस:** यह राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों के लिए बहुत उपयुक्त किस्म है। फलों का औसत वजन 250-300 ग्राम तथा उपज 70-100 फल प्रति वृक्ष होती है। इसके दाने गुलाबी लाल, रसदार व स्वादिष्ट तथा बीज बहुत मुलायम होते हैं। इस किस्म में फलों में फटने की समस्या भी कम होती है।
4. **बेसिन सीडलैस:** इसके पौधों की ऊंचाई मध्यम तथा फैलाव सामान्य होता है। फलों का रंग लाल व आकार बड़ा (275-325 ग्राम) होता है। गुलाबी रंग के दाने स्वादिष्ट, मीठे (टी.एस.एस. 16.2° ब्रिक्स) रसदार एवं मुलायम होते हैं ज्योति (जी.के.वी.-1) इससे चयनित की गई हैं।
5. **ज्योति:** इसके फल मध्यम आकार के, पीलापन लिए लाल होता है। इसके फल बहुत मीठे, बीज गुलाबी एवं नरम होते हैं।
6. **अमलीदाना:** बीजावरण अत्यधिक खट्टे (4.8%), फल मध्यम आकार के, पौधा बौना होता है। अनारदाना के लिए उपयुक्त किस्म है।
7. **मस्कट:** इस किस्म के फलों में छिलके का रंग पीला तथा दानों का रंग हल्का सफेद होता है। फलों का औसत वजन 300-350 ग्राम होता है। दाने मीठे एवं स्वादिष्ट परन्तु बीज कठोर होते हैं। महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी (महाराष्ट्र) द्वारा पी-23 एवं पी-26 किस्में मस्कट किस्म के ही क्लोन से चयनित की गई हैं। इन किस्मों के दाने लाल, रसदार तथा मुलायम बीज वाले होते हैं।
8. **धोलका :** इसके फलों का रंग लाल तथा औसत वजन 300-500 ग्राम तक होता है। हल्के गुलाबी दाने रसदार व मीठे होते हैं यह किस्म गुजरात में अधिक लोकप्रिय है।

9. **मूदुला** : यह एक अच्छी उपज देने वाली संकर किस्म है जो गणेश तथा रुसी किस्मों के मेल से प्राप्त हुई है। इसके फल का आकार बड़ा (400-525 ग्राम), रंग लाल तथा दाने गहरे लाल होते हैं। दाने मीठे (17.9° ब्रिक्स टी.एस.एस.) स्वादिष्ट एवं मुलायम होते हैं। इस किस्म के फलों की देश विदेश में अधिक मांग है।
10. **रुबी** : यह एक संकर किस्म है जिसे भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर से जारी किया गया है। फलों का औसत भार 225-250 ग्राम तथा दाने गहरे लाल व मुलायम होते हैं।

पौधे तैयार करना

बाग लगाने के लिए अच्छे किस्म के स्वस्थ व उन्नत पौधों की आवश्यकता होती है। अनार की खेती के लिए इसका प्रवर्धन बीज, गूटी, कलम और टिशू कल्चर विधियों से किया जाता है। बीजू पौधों की तुलना में कलमी पौधे शीघ्र फल देने लगते हैं। बीजू पौधों के विकास एवं फलन में भी काफी असमानता पायी जाती है। पौधे तैयार करने के लिए एक वर्ष पुरानी शाखाओं से प्राप्त 9-10 इंच लम्बी कलमों को 1000 पी.पी.एम. इन्डोल ब्यूटारिक एसिड (आईबीए) अथवा सेरेडेक्स बी या स्टेक्स (जड़ विकसित करने वाले पौध नियामक) से उपचारित करके पौधशाला में लगाते हैं। पौध वृद्धि नियामकों से उपचार करके कलम रोपने पर कल्ले व जड़ें शीघ्र फूटती हैं तथा पौधे भी शीघ्र तैयार होते हैं। कलम लगाने के लिए फरवरी मार्च अथवा जून-जुलाई का समय अत्यधिक उपयुक्त होता है। कलम लगाने के लिए बालू रेत, चिकनी मिट्टी व सड़ी हुई गोबर की खाद के बराबर मात्रा के मिश्रण से भरी हुई पोलिथीन की नलियाँ (25x10 सेमी. आकार) भरकर तैयार कर लेते हैं। कलमों क्यारियों में भी लगाई जा सकता है। गूटी द्वारा अनार के पौधे तैयार करने में अधिक सफलता के लिए 10,000 पी.पी.एम. इन्डोल ब्यूटारिक एसिड (आई.बी.ए) का लेप सहायक होता है।

पौधे लगाने की विधि एवं समय

बाग लगाने का समय सिंचाई की सुविधा होने पर फरवरी- मार्च या वर्षा ऋतु (जुलाई- अगस्त) का समय उपयुक्त होता है। पौधे लगाने से 15-25 दिन पूर्व आवश्यकता के अनुसार 4-6x 4-6 मीटर की दूरी पर 60x60x60 सेमी के आकार के गड्ढे तैयार कर लिया जाता है। गड्ढे को 15 दिन खुला रखने के बाद प्रति गड्ढा 2 भाग मिट्टी+ भाग गोबर की खाद+ 1 किग्रा नीम की खली+10 ग्राम कार्बोफ्यूरान अच्छे से मिलाकर 15 सेमी ऊंचा तक भरने के बाद सिंचाई करें ताकि मिट्टी अच्छी तरह से जम जाए उसके बाद रोपण करें एवं रोपण पश्चात तुरंत सिंचाई करें।

सिंचाई एवं जल प्रबंध

पौध रोपण के बाद दो-तीन वर्ष तक अधिक देख-रेख की आवश्यकता होती है। अनार उत्पादन के लिए सिंचाई की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। अच्छी गुणवत्ता एवं अधिक फल उत्पादन के लिए अनार के बाग में गर्मियों में 5-7 दिन, सर्दियों में 10-12 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार मृदा नमी को संरक्षित रखने के लिए काली पॉलीथीन (200 गेज) का पलवार बिछाना भी लाभदायक होता है तथा केओलीन के 10 प्रतिशत घोल का पर्णिय छिड़काव करके पत्तियों द्वारा होने वाली जल हानि को कम किया जा सकता है। भूमि तथा वातावरण में निरन्तर पर्याप्त नमी बनाये रखनी चाहिए। शुष्क क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई पद्धति (टपक विधि) अत्यधिक लाभप्रद है। क्योंकि इससे 50-60 प्रतिशत पानी की बचत तो होती ही है, साथ ही 10-15 प्रतिशत उपज में भी बढ़ोतरी हो जाती है तथा फल फटने की समस्या का भी एक सीमा तक समाधान हो जाता है। बोरेक्स के 0.2 प्रतिशत घोल के छिड़काव से भी फलों को फटने से कुछ हद तक बचाया जा सकता है।

खाद एवं उर्वरक

पौधों में अच्छी बढ़वार, फलत और गुणवत्ता के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्व देना अति आवश्यक है। खाद एवं उर्वरक की मात्रा का निर्धारण मृदा परीक्षण द्वारा करना चाहिए। सामान्य उर्वरता वाली भूमि में एक वर्ष के पौधे में 10-15 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद नाइट्रोजन 200-250 ग्राम, 125 ग्राम फास्फोरस तथा 100-125 ग्राम पौटेशियम देना चाहिए। नत्रजन उर्वरक की मात्रा दो भागों में बांट कर मध्य जनवरी से फरवरी तथा जून में पौध वृद्धि एवं फूल आने व फल बनने की अवस्था पर देना चाहिए। गोबर की खाद, नत्रजन उर्वरक की आधी मात्रा व फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा पौधों के चारों तरफ एक से डेढ़ मीटर की परिधि में 15-20 से.मी. गहराई में डालकर मिट्टी में मिला देना चाहिए अच्छे गुणवत्ता के फल उत्पादन के लिए सूक्ष्म तत्वों का भी महत्व है। अतः सूक्ष्म तत्वों की पूर्ति के लिए जिंक सल्फेट (0.6%), फेरस सल्फेट (0.4%) तथा बोरेक्स (0.2%) के घोल का पर्णिय छिड़काव (एक साथ या अलग अलग) फूल आने तथा फल बनने के समय करना चाहिए। शुष्क क्षेत्र में खाद एवं उर्वरक वर्ष प्रारंभ होने पर देना ठीक रहता है। पौधों की आयु के अनुसार खाद एवं उर्वरकों की मात्रा हर वर्ष बढ़ाते रहना

चाहिए जिससे कि पांच वर्ष बाद प्रत्येक पौधे को क्रमशः 625 ग्राम नाइट्रोजन, 250 ग्राम फास्फोरस तथा 250 ग्राम पोटैशियम उर्वरक प्रतिवर्ष दिया जा सके।

सधाई एवं काट-छांट

अनार का पौधा झाड़ीनुमा होता है, इसलिए पौधों को उचित आकार व ढांचा देने के लिए सधाई एवं काट-छांट की नितान्त आवश्यकता होती है। अनार में बहुतनीय सधाई (मल्टीस्टेम ट्रेनिंग सिस्टम) का उपयोग किया जाता है। संरचनात्मक ढांचे को विकसित करने के लिए सधाई 6-8 महीने के बाद शुरू होता है और रोपण के 2-3 साल बाद तक चलता है। सबसे निचली शाखा को बहुतनीय सधाई के साथ जमीन से 30-40 सेमी ऊपर विकसित होने देना चाहिए। शुष्क क्षेत्र में, दीमक के हमले से तनों/पौधों के नुकसान से बचने के लिए मल्टीस्टेम ट्रेनिंग (3-5 तने) प्रणाली को प्राथमिकता दी जाती है, जो कि बगीचे के विकास के प्रारंभिक चरण में गर्म शुष्क क्षेत्र में गंभीर समस्या है। सूखी टहनियों, शाखाओं को हटाने और वनस्पति और प्रजनन विकास के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए साल में दो बार छंटाई की जाती है। सर्दियों में कटाई के तुरंत बाद बड़ी छंटाई की जाती है और मई-जून के दौरान फूलों की कटाई के समय हल्की छंटाई की जाती है। गंभीर जीवाणु ब्लाइट संक्रमित बगीचों में, कटाई के बाद भारी छंटाई की जाती है और जहां तक संभव हो रोगग्रस्त हिस्से को हटा दिया जाता है। प्रशिक्षण और छंटाई के बाद पौधे के कटे हुए सिरे पर 10% बोर्डो पेस्ट लगाएं।

बहार एवं उसका नियंत्रण

अनार में वर्ष में तीन बार 'अम्बे बहार' (जनवरी-फरवरी) 'मृग बहार' (जून-जुलाई) और 'हस्त बहार' (सितम्बर-अक्टूबर) में फूल आते हैं। व्यवसायिक रूप से केवल एक बार की फसल ली जाती है और इसका निर्धारण पानी की उपलब्धता एवं बाजार की मांग के अनुसार किया जाता है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधा नहीं होती है वहाँ फल अम्बे बहार से लिए जाते हैं। बहार नियंत्रण के लिए जिस बहार से फल लेने हो उसके फूल आने के दो माह पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिए। कुछ रसायनों (थायोयूरिया, पोटेशियम आयोडाइड इत्यादि) के पर्णय छिड़काव द्वारा भी पतझड़ लाकर यह कार्य किया जा सकता है। अच्छी गुणवत्ता के फल प्राप्त करने के लिए पेड़ की आयु, आकार एवं स्वास्थ्य के आधार पर उचित संख्या में ही फल रखना चाहिए। जिसके लिए फूल और छोटे फलों को तोड़कर केवल वांछित संख्या में ही फलों को बढ़ने देना चाहिए। इसके अतिरिक्त बड़े पैमाने पर फूल आने के समय इथेफान (2000 पी.पी.एम) या एलार (500-3000 पी.पी.एम) का छिड़काव करने से भी फल संख्या को निर्धारित किया जा सकता है। एक विकसित पेड़ पर लगभग 50-60 फल रखना उपज एवं गुणवत्ता की दृष्टि से ठीक रहता है।

रोग एवं कीट नियंत्रण

अनार के पौधों व फलों को रोगों व कीटों से काफी नुकसान होता है अतः इनकी रोकथाम करना बहुत आवश्यक है। प्रमुख रोगों के लक्षण, कीटों की पहचान एवं उनके नियंत्रण के उपाय निम्नलिखित हैं-

1. **अनार की तितली** :- इस कीट का वैज्ञानिक नाम इयूडोरिक्स आईसोक्रेट्स है यह अनार का सबसे गंभीर कीट है। इसके द्वारा 20-80 प्रतिशत हानि की जाती है। प्रौढ तितली फूलों पर तथा छोटे फलों पर अण्डे देती है। जिनसे इल्ली निकलकर फलों के अन्दर प्रवेश कर जाती है तथा बीजों को खाती है। प्रकोपित फल सड़ जाते हैं और असमय झड़ जाते हैं।

प्रबंधन

1. प्रभावित फलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
 2. खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें।
 3. स्पाइनोसेड (एस.पी.) की 0.5 ग्राम मात्रा या इण्डोक्साकार्ब (14.5 एस.पी.) 1 मिली. मात्रा या ट्रायजोफास (40 ई.सी.) की 1 किलो मात्रा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर प्रथम छिड़काव फूल आते समय एवं द्वितीय छिड़काव 15 दिन बाद करें।
 4. फलों को बाहर पेपर से ढँक दें।
2. **तना छेदक** :- इस कीट का वैज्ञानिक नाम जाइलोबोरस स्पी. है। इस कीट की इल्लियाँ शाखाओं में छेद बनाकर अंदर ही अंदर खाकर खोखला करती है शाखाएँ पीली पड़कर सूख जाती हैं।

प्रबंधन

1. क्षतिग्रस्त शाखाओं को काट कर इल्लियों सहित नष्ट कर देना चाहिए।
2. पूर्ण रूप से प्रभावित पौधों को जड़ सहित उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
3. कीट के प्रकोप की अवस्था में मुख्य तने के आस-पास क्लोरोपायरीफास 2.5 मिली./लीटर पानी/ट्राईडेमार्फ 1 मिली./लीटर पानी में घोलकर टोआ (ड्रेन्चिंग) दें।

4. अधिक प्रकोप की अवस्था में तने के छेद में न्यूवान (डी.डी.वी.पी.) की 2-3 मिली. मात्रा छेद में डालकर छेद को गीली मिट्टी से बंद कर दें।

3. **माहू** :- इस कीट का वैज्ञानिक नाम एफिस पुनेकी है। यह कीट नई शाखाओं, पुष्पों से रस चूसते हैं। परिणाम स्वरूप पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं। साथ ही पत्तियों पर मधु सार्व स्रावित करने से सूटी मोल्ड नामक फफूंद विकसित हो जाती है। जिससे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है।

प्रबंधन

1. प्रारम्भिक प्रकोप होने पर प्रोफेनाफास-50 या डायमिथोएट-30की 2 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। वर्षा ऋतु के दिनों में घोल में स्टीकर 1मिली./लीटर पानी में मिलाएं।
2. अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.एल.) 0.3 मिली./लीटर या थायामिथोग्जाम (25 डब्लू.जी.) 0.25 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

1.**सरकोस्पोरा फल धब्बा** :- यह रोग सरकोस्पोरा स्पी. नामक फफूंद से होता है। इस रोग में फलों पर अनियमित आकार में छोटे काले रंग के धब्बे बन जाते हैं जो बाद बड़े धब्बों में परिवर्तित हो जाते हैं।

प्रबंधन

1. प्रभावित फलों को तोड़कर अलग कर नष्ट कर दें।
2. रोग की प्रारम्भिक अवस्था में मैन्कोजेब (75 डब्लू.पी.) 2.5 ग्राम/लीटर या क्लोरोथायलोनिल (75डब्लू.पी.) 2 ग्राम/लीटर पानी में घोलकर 2-3 छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।
3. अधिक प्रकोप की अवस्था में हेक्साकोनाजोल (5 ई.सी.) 1 मिली./लीटर या डाईफनकोनाजोल (25 ई.सी.) 0.5 मिली./प्रति लीटर पानी में घोलकर 30-40 के अन्तराल पर छिड़काव करें।

2. **फल सड़न** :- यह रोग एस्परजिलस फोइटिडस नामक फफूंद से होता है। इस रोग में गोलाकार काले धब्बे फल एवं पुष्पय डण्डल पर बन जाते हैं। काले धब्बे पुष्पिय पत्तियां से शुरू होकर पूरे फल पर फैल जाते हैं।

प्रबंधन

1. कार्बेन्डाजिम (50 डब्लू.पी.) 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

तुड़ाई :-

अनार नान-क्लामेट्रिक फल है जब फल पूर्ण रूप से पक जाये तभी पौधे से तोड़ना चाहिए। पौधों में फल सेट होने के बाद 120-130 दिन बाद तुड़ाई के तैयार हो जाते हैं। पके फल पीलापन लिए लाल हो जाते हैं।

उपज एवं भंडारण

पौधे रोपण के 2-3 वर्ष पश्चात फलना प्रारम्भ कर देते हैं। लेकिन व्यावसायिक रूप से उत्पादन रोपण के 4-5 वर्षों बाद ही लेना चाहिए। अच्छी तरह से विकसित पौधा 60-80 फल प्रति वर्ष 25-30 वर्षों तक देता है। शीत गृह में 5 डिग्री सेल्सियस तापमान पर 2 माह तक भण्डारित किया जा सकता है।